

---

# Shri DakShinamurti Navaratnamalika Stotra

श्रीदक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिकास्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Shri DakShinamurti Navaratnamalika Stotra

File name : daksh9.itx

Category : shiva, stotra

Location : doc\_shiva

Author : Not known

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Translated by : -

Description-comments : Hymn of 9 verses in praise of Dakshinamurti

Latest update : March 6, 2003

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 30, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीदक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिकास्तोत्रम्



॥ श्री दक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिका स्तोत्रम् ॥

मूलेवटस्य मुनिपुङ्गवसेव्यमानं

मुद्राविशेषमुकुलीकृतपाणिपद्मम् ।

मन्दस्मितं मधुरवेषमुदारमाद्यं

तेजस्तदस्तु हृदि मे तरुणेन्दुयूयम् ॥ १ ॥

शान्तं शारदयन्द्रकान्तिधवलं यन्द्राभिरमाननं

यन्द्रार्कपिमकान्तिकुण्डलधरं यन्द्रावदातांशुकम् ।

वीणापुस्तकमक्षसूत्रवलयं व्याख्यानमुद्रांकरै-

र्भिन्नाणं कलये हृदा मम सदा

शास्तरभिष्टार्थदम् ॥ २ ॥

कर्पूरपात्रमरविन्दणायताक्षं

कर्पूरशीतलहृदं करुणाविलासम् ।

यन्द्रार्धशेभरमनन्तगुणाभिराम-

मिन्द्रादिसेव्यपदपङ्कजमीशमीडे ॥ ३ ॥

धुद्रोधः स्वर्णमयासनस्थं

मुद्रोत्पलसद्भाडुमुदारकायम् ।

सद्रोडिणीनाथकणावतंसं

भद्रोदधिं कञ्चन चिन्तयामः ॥ ४ ॥

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिणयनं श्वेताङ्गरागप्रभं

भालं मौञ्जिधरं प्रसन्नवदनं न्यत्रोधमूलेस्थितम् ।

पिङ्गाक्षं मृगशावकस्थितिकरं सुभ्रुवसूत्राकृतिम्

भक्तानामभयप्रदं भयडरं श्रीदक्षिणामूर्तिकम् ॥

५ ॥

श्रीकान्तद्रुष्टिर्गोपमन्यु तपन स्कन्देन्द्रनन्दाद्यः

प्राचीनागुरवोऽपियस्य करुणालेशाद्रतागौरवम् ।

तं सर्वादिगुरुं मनोज्ञवपुषं मन्दस्मितालङ्कृतं

स्मिन्द्राकृतिमुग्धपाणिनिनिं चित्तं शिवं कुर्महे ॥ ६ ॥

कपर्दिनं यन्द्रकणावतंसं

त्रिनेत्रमिन्दुपतिमाननोज्ज्वलम् ।

यतुर्भुजं ज्ञानदमक्षसूत्र-

पुस्ताग्निदस्तं हृदि भावयेच्छिवम् ॥ ७ ॥

वामोऽपरिसंस्थितां गिरिसुतामन्योन्यमालिङ्गितां

श्यामामुत्पलधारिणी शशिनिभांयावोक्यन्तं शिवम् ।

आश्लिष्टेन करेण पुस्तकमधो कुंभं सुधापूरितं

मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरैर्भुक्ताक्षमालां लजे

॥ ८ ॥

वटतरुनिकटनिवासं पटुतरविज्ञानमुद्रितकराब्जम् ।

कञ्चनदेशिकमाद्यं कैवल्यानन्दकन्दणं वन्दे ॥ ९ ॥

एति श्री दक्षिणामूर्ति नवरत्नमाला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Sunder Hattangadi

---



*Shri DakShinamurti Navaratnamalika Stotra*

pdf was typeset on August 30, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

